विद्या भवन ,बालिका विद्यापीठ, लखीसराय
रूपम कुमारी ,वर्ग सप्तम्, विषय हिंदी
दिनांक - 17 -11 -20

based on NCERT pattern

सुप्रभात बच्चों,
महापर्व छठ की हार्दिक शुभकामनाएं !

आज के पठन-पाठन के तहत कर्तव्य का कहानी के अंतिम पृष्ठ को लेकर उपस्थित हैं ।

कहानी के शेषांश ...

अब चित्रगुप्त किसान की ओर मुड़े और बोले "किसान का कर्तव्य है लोगों का पेट भरना ।

तुमने जीवन भर कड़ी मेहनत कर अनाज उगाया। काम ही तुम्हारी पूजा थी।अपनी सारी भूमि को नई पीढ़ी के लिए छोड़ अपने लिए कोई टुकड़ा नहीं रोका। तुम सच्चे त्यागी हो। तुम सीधे स्वर्ग के सीधे अधिकारी हो। राजा, साधु और किसान तीनों ही अपना-अपना भाग्य निर्णय सुनकर ठगे से रह गए।

कुछ देर बाद यमराज ने सन्नाटा तोड़ा, उन्होंने कहा अगर आप लोगों की कोई अंतिम इच्छा हो तो बताइए।"

राजा ने महल, साधु ने कोठी तथा किसान ने अपना परिवार देखने की इच्छा प्रकट की।

यमराज बोले, “आंखें मींचिए। मेरे कहने पर खोलिए गा । तथास्तु !” राजा सोच रहा था महल में उसके ही चर्चे होंगे लोग बिलख रहे होंगे पर उन्होंने देखा योगराज के राज्याभिषेक की तैयारियां हो रही हैं ।लोग युवराज की प्रशंसा कर रहे हैं । उसकी कहीं चर्चा नहीं थी । नर्तकियां जो उसका मन बहलाती थी अब युवराज को आकर्षित करना चाह रही हैं राजा घबराकर चीखा ,” मुझसे और नहीं देखा जाता ।

साधु ने सोचा था- लोग उस की समाधि पर जमा होंगे ।पूजा- अर्चना हो रही होगी धूप और अगर की सुगंध से कुटी महक रही होगी । पर वहां कोई नहीं था । उसका अपना सामान भी लोग ले गए हैं । साधु निराशा में

बड़बड़ाया , "यहां अब देखने को है ही क्या ।"

किसान को डर था कि उसके बैल भूखे होंगे, पर उसने देखा बैलों को भूसा पड़ा था । पत्नी की आंखें गीली थीं । और वह बेटे को समझा रही थी ,"बेटा , उठ । बैल ले जा । खेतों में पानी नहीं लगा तो तेरे पिता के मेहनत से बोए हुए खेत सूख जाएंगे ।

यमराज ने पूछा, "देख चुके किसान ?" किसान आंखें मींचे गिड़गिड़या ,थोड़ी देर और प्रभु !बेटे को खे सींचते देख लूं । लेकिन समय समाप्त हो चुका है । अब आंखें खोलिए यमराज की आवाज गूंजी ।

<u>सब ने आंखें खोली । राजा घोर यातनाएं तनाव में खड़े थे ।साधु के आगे सिर्फ काला अंधकार था ।वहां महाशून्य साईं साईं कर रहा था ।किसान के आगे फलदार पैडों की राह थी । यमराज का दरबार किसी के सामने अब नहीं था ।</u>

<u>समाप्त</u>